

PROF. SUDAM LAXMAN KATE

Prof S.L Kate is a retired Prof of Biochemistry Govt Medical College and former Deputy Director, Tribal Health Research Project. B. J. Medical College. Government of Maharashtra. Prof Kate's pioneering research in sickle cell disease specially in tribal populations of India has been internationally recognized and made India a global pioneer in knowledge and prevention of Sickle Cell disease specially in remote tribal populations.

2. Born on May 4, 1933, Prof Kate obtained his PhD in medical genetics from the University of Pune in 1979. He contributed in developing the Medical Genetic Center founded by Prof GS Mutalik at B.J. Medical college Pune in 1972. This was the first medical genetic diagnosis and treatment center in Maharashtra. With support from this Center, he initiated large population genetic studies of medical importance all over India, specially in remote and primitive tribal populations. He was the first scientist to find presence of sickle cell disorder in the tribes of North Maharashtra in 1972. Subsequently, he studied the sickle cell disease in details in various tribes of Maharashtra despite enormous challenges and hardships. His unique observations and studies on red cell genetic disorders in tribal populations of Maharashtra have been internationally recognized.

3. Based on his early field experience in remote inaccessible tribal areas where the main challenge was lack of adequate medical laboratory infrastructure he pioneered the development of point-of-care indigenous, low cost, simple and minimally invasive diagnostic tests for hemoglobinopathies that could be performed at home-level of these remote tribal populations.

4. Committed to providing diagnosis and sustainable free-health care to sickle cell affected populations, he established a community health care center in 1998 called "Sickle Cell Dawakhana" in the remote Satpuda hilly areas of North Maharashtra under the aegis of Maharashtra Arogya Mandal Hadapsar, Pune. This Center provides diagnostics, ayurvedic medicines, counseling and prevention activities free of cost to the local tribal population since the last twenty-two years. This has significantly benefited the sickle cell affected tribal populations of this area. This Center also supports other program activities on sickle cell disease in India.

5. Prof Kate is the recipient of numerous awards and honors for his work. Notable among them being the Bhatia Oration award (ICMR) in 2004, the Janardan Maharaj Poharya Valvi award 2007, Maharashtra Govt Adivasi Sansthan Puraskar for tribal welfare 2013-14. Lifetime achievement award for sickle cell anemia by Maharashtra University of Health Sciences 2016 and the first Indian scientist to receive the Sickle Cell Advocate award from the 'Sickle 101 Society" California. USA. He was the Secretary (1985-86) Indian Society of Human Genetics and Emeritus scientist Indian Council of Medical Research.

पद्म श्री



प्रोफेसर सुदाम लक्ष्मण काटे



प्रोफेसर सुदाम लक्ष्मण काटे गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज से जैव रसायन के सेवानिवृत्त प्रोफेसर तथा बी. जे. मेडिकल कॉलेज, महाराष्ट्र सरकार के जनजातीय स्वास्थ्य अनुसंधान परियोजना के पूर्व उप-निदेशक हैं। प्रोफेसर काटे की भारत की जनजातीय जनसंख्या में सिक्कल सैल डिजीज के क्षेत्र में की गई अग्रणी खोज को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है तथा दूर-दराज में स्थित आदिवासी लोगों में सिक्कल सैल डिजीज की जानकारी और रोकथाम में भारत पूरे विश्व में प्रणेता बन गया है।

2. आपका जन्म 04 मई, 1933 में हुआ था। आपने वर्ष 1979 में पुणे विश्वविद्यालय से मेडिकल जैनेटिक्स में पीएच. डी की उपाधि प्राप्त की। आपने वर्ष 1972 में बीजे मेडिकल कॉलेज पुणे में प्रोफेसर जी. एस मुतालिक द्वारा स्थापित मेडिकल जैनेटिक सेंटर को विकसित करने में अपना योगदान दिया। यह महाराष्ट्र में अपनी तरह का पहला मेडिकल जैनेटिक्स डाइग्नोसिस एंड ट्रीटमेंट सेंटर था। इस केन्द्र के सहयोग से आपने पूरे भारतभर में विशेषकर दूर-दराज स्थित आदिवासी लोगों में चिकित्सकीय महत्व के जैनेटिक अध्ययन की शुरुआत की। आप ऐसे प्रथम वैज्ञानिक हैं जिन्होंने वर्ष 1972 में उत्तरी महाराष्ट्र में आदिवासी लोगों में सिक्कल सैल डिसऑर्डर का पता लगाया। बाद में, अनेक चुनौतियों और मुश्किलों के बावजूद आपने महाराष्ट्र की विभिन्न आदिवासी जनजातियों में सिक्कल सैल डिसऑर्डर का विस्तृत अध्ययन किया। महाराष्ट्र की आदिवासी लोगों में रैड सैल जैनेटिक्स डिसऑर्डर संबंधी आपकी विलक्षण खोज एवं अध्ययन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई।

3. दूर-दराज में स्थित दुर्गम आदिवासी क्षेत्रों, जहां पर्याप्त चिकित्सा संबंधी प्रयोगशाला सुविधाओं का अभाव सबसे बड़ी चुनौती था, में आपके शुरुआती फील्ड अनुभव के आधार पर आपने हिमोग्लोबिनोपैथीज के लिए स्वदेशी, कम लागत वाले सरल और मिनिमली इन्वेजिव डाइग्नोस्टिक टैस्ट के लिए प्वाइंट-ऑफ-केयर के विकास की शुरुआत की जिन्हें इन दूर-दराज के जनजातीय लोगों के बीच में ही किया जा सकता था।

4. सिक्कल सैल से प्रभावित लोगों की जांच तथा उनका नि:शुल्क स्थायी इलाज करने के लिए प्रतिबद्ध प्रोफेसर एस. एल. काटे ने वर्ष 1998 में महाराष्ट्र आरोग्य मण्डल हदाप्सर, पुणे के तत्वावधान में उत्तरी महाराष्ट्र के दूर-दराज स्थित सतपुड़ा पहाड़ी क्षेत्रों में "सिक्कल सैल दवाखाना" नामक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना की। यह केन्द्र पिछले 22 वर्षों से स्थानीय आदिवासी लोगों को नि:शुल्क जांच, आयुर्वेदिक दवाइयां, परामर्श प्रदान करने की सुविधा प्रदान कर रहा है तथा इस रोग की रोकथाम की दिशा में कार्य कर रहा है। इस केन्द्र की वजह से इस क्षेत्र की सिक्कल सैल से प्रभावित आदिवासी जनता को काफी फायदा हुआ है। यह केन्द्र भारत में सिक्कल सैल डिजीज संबंधी अन्य कार्यक्रम एवं गतिविधियों में भी सहायता करता है।

5. प्रोफेसर काटे को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से अलंकृत किया गया है। इन पुरस्कारों में प्रमुख रूप से वर्ष 2004 में प्रदान किया गया भाटिया ओरेशन अॅवार्ड (आईसीएमआर), जनार्दन महाराज पौहरिया वलवी अॅवार्ड, 2007, जनजातीय कल्याण के लिए महाराष्ट्र सरकार का वर्ष 2013-14 का आदिवासी संस्थान पुरस्कार शामिल हैं। आपको महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेस द्वारा वर्ष 2016 में सिक्कल सैल अनीमिया के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अॅवार्ड से नवाजा गया तथा "सिक्कल 101 सोसाइटी" केलिफोर्निया, यूएसए की ओर से सिक्कल सैल एडवोकेट अवार्ड प्राप्त करने वाले आप प्रथम भारतीय वैज्ञानिक हैं। आप इंडियन सोसाइटी ऑफ ह्यूमन जैनेटिक्स तथा एमिरिट्स साइंटिस्ट इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के सचिव (1985-86) रहे हैं।